बरमा पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Department of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M.A. Semester - III

Paper/CC – 10 Cultural History Of South-East Asia

प्राचीन काल में भारतीय लोग व्यापार आदि के उद्देश्य से दक्षिण-पूर्व एशियाई देशो का रुख किया लेकिन व्यापार आदि करते-करते बहुत दिन बीत जाने पर इन्ही देशो में धीरे-धीरे भारतीय उपनिवेश की स्थापना करने लगे। जब भारतीय उपनिवेश स्थापित कर दिए गए तो उन्होंने अपने धार्मिक किया-कलाप तथा अपनी संस्कृति को दक्षिण-पूर्व एशियाई देशो में फैलाना प्रारंभ करने लगे। जिससे धीरे-धीरे वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार होने लगा तथा एक बड़ी आबादी भारतीय संस्कृति को अपनाने लगी। बरमा जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देश में भी यही हुआ। पहले हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। उसके बाद बौद्ध धर्म अपनी जड़े मजबूत करने लगा। आज भी इन देशों में बौद्ध धर्म मुख्य धर्म बन गया है। मलाया, सुमात्रा, जावा आदि दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में इस्लाम का प्रचार हो जाने के कारण भारतीय धर्मों का लोप हो गया था। पर बरमा के निवासी इस समय भी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। पालि भाषा का वहाँ अध्ययन-अध्यापन होता है, और वहां के लोग बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धार्मिक विचारों को मानते हुए उसी प्रकार से जीवन यापन करते हैं जैसे कि प्राचीन समय में भारतीय बौद्ध किया करते थे। पर पौराणिक हिन्दू धर्म का अब बरमा से लोप हो चुका है। किसी समय वहां शैव और

वैष्णव धर्मों का भी प्रचार रह चुका है, यह पुरातत्व-सम्बन्धी अवशेषों द्वारा प्रमाणित है।

हम देखते है की जब सातवीं सदी के बाद भारत में बौद्ध धर्म का ह्रास प्रारम्भ हो गया था। पर बरमा में न केवल वह प्रचलित रहा, अपितु उसके साहित्य तथा दर्शन में निरन्तर विकास भी होता रहा। बहुत-से पालि ग्रन्थ बरमा में लिखे गये और वहां के स्थविर और विद्वान् बौद्ध दर्शन तथा पालि साहित्य को समृद्ध बनाने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहे। पालि भाषा उसी तरह से भारतीय भाषा है, जैसे कि संस्कृत है। वरमा में उसके साहित्य का कितना अधिक विकास हुआ था, इसका एक संकेत 1442 ईस्वी के एक अभिलेख से मिलता है, जिसे कि बरमा के एक शासनाधिकारी ने उत्कीर्ण कराया था। इस अभिलेख में उस शासनाधिकारी तथा उसकी पत्नी द्वारा बौद्ध संघ को दिये गये दान का वर्णन है। उसने उद्यान, खेत, दास आदि के अतिरिक्त बहुत-से ग्रन्थ भी संघ को प्रदान किए थे, जिनकी पूरी सूची अभिलेख में विद्यमान है। इस सूची में उल्लिखित ग्रन्थों की संख्या 295 है । इनमें बहुसंख्यक ग्रंथ पालि के हैं, पर अनेक अन्य संस्कृत के भी हैं। पन्द्रहवीं सदी के मध्य भाग में बरमा में किस साहित्य का अध्ययन हुआ करता था, इस सूची द्वारा यह भली-भांति जाना जा सकता है। बौद्ध साहित्य के विकास की जो परम्परा भारत में अवरुद्ध हो गई थी, बरमा में कायम रही।

बरमा के समान लंका (सिंहल) में भी स्थविरवाद का प्रचार था, अतः धार्मिक क्षेत्र में बरमा का लंका के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा और वहां के स्थविर व विद्वान् धर्म के मामलों में लंका के बौद्धों से प्रेरणा प्राप्त करने लगे। पर राजनीति और कानून जैसे विषयों में बरमा का प्रेरणास्रोत भारत ही रहा। वहाँ के धम्मसथ नाम के ग्रन्थों का सम्बन्ध कानून और लौकिक आचार-विचार के साथ है। ये ग्रन्थ पालि में हैं, और इन्हें वहां के कानून का आधार माना जाता है। इनकी रचना मनु, नारद और याज्ञवल्क्य आदि के हिन्दू धर्मशास्त्रों के आधार पर की गई थी। दक्षिणी बरमा के अन्यतम राजा बगरु ने तेरहवीं सदी के अन्तिम चरण में धम्मसथ का संकलन कराया था, जो तलङ भाषा में था । सोलहवीं सदी में बुद्धघोष ने उसे मनुसार नाम से पालि भाषा में अनुदित किया। इस धम्मसथ का

मनुसार नाम होना ही यह सूचित करता है, कि मनुस्मृति या मानव संहिता के आधार पर इसकी रचना की गई थी।

बरमा पर भारत का प्रभाव इतना अधिक रहा है, कि वहां के कितने ही प्रदेशों तथा नगरों के नाम भारतीय थे। जो भारतीय उपनिवेशक वहां गये, उन्होंने अपने नगरों तथा बस्तियों आदि के वे ही नाम रखे, जिनसे वे भारत में परिचित थे। इसीलिये बरमा में भी प्रदेशों के नाम अवंती, गान्धार, कम्बोज, अपरान्त आदि रखे गये, और वाराणसी, चम्पानगर, कुसुमपुर, मिथिला, पुष्करावती, राजगृह, सकाश्य, वैशाली आदि नाम की नगरियां वहाँ बसायी गई।

बौद्ध धर्म के अनुयायी जो लोग भारत से जाकर बरमा में बसे, वे अपने मूलदेश के उन स्थानों को नहीं भूल सके जिनका भगवान बुद्ध के जीवन के साथ सम्बन्ध था। उन्होंने अपने नये देश में अनेक स्थानों का सम्बन्ध बुद्ध से जोड़ दिया, ताकि उन्हें भी उसी प्रकार से पवित्र समझा जा सके, जैसे कि भारत में बोधगया, सारनाथ, कपिलवस्तु आदि पवित्र माने जाते थे। उन्होंने कल्पना की, कि बुद्ध बरमा भी गये थे और उनके जीवन के साथ सम्बन्ध रखनेवाली अनेक घटनाएँ बरमा में घटी थीं। अपने नये देश के अनेक राज्यों के राजवंशों का सम्बन्ध भी उन्होंने शाक्यकुल के साथ जोड़ दिया, क्योंकि बुद्ध का जन्म इसी कुल में हुआ था। राजा अशोक मौर्य का बौद्ध धर्म के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी राजा के समय में देश-विदेश में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ था। इस दशा में बरमा के बौद्ध अशोक और उसके कुल को भी कैसे भूल सकते थे। उत्तरी बरमा में इरावदी नदी के तट पर एक प्रदेश को 'मौर्य' नाम भी दिया गया, और उन स्थानों को भी बसाया जाने लगा, जिन्हें कि अशोक के समय के बौद्ध प्रचारकों ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया था। बरमा में बसे हुए भारतीयों को अपने मूलदेश के प्रति इतनी अधिक ममता थी, कि उन्होंने बरमा में एक ऐसे नये भारत के निर्माण का प्रयत्न किया, जो असली भारत से मिलता-जुलता हो।

बरमा में जिन स्तुपों, विहारों और मन्दिरों आदि का निर्माण कराया था, वे भारतीय वस्तुशिल्प के अनुसार बनाये गए थे। राजा अनिरुद्ध द्वारा निर्मित

स्वेजिगान का स्तूप एक विशाल ठोस महास्तूप है, जिसके चारों ओर देवताओं के तीस मन्दिर हैं। इन्हें महास्तूप की पूजा करता हुआ प्रदर्शित किया गया है। स्वेजिगान के महास्तूप तथा समीपवर्ती मन्दिरों का निर्माण भारतीय वास्तुशिल्प के अनुसार किया गया था। उस समय बौद्ध स्थविर व भिक्षु बड़ी संख्या में भारत से बरमा जाया करते थे, और बरमी भिक्षु भी तीर्थयात्रा आदि के लिए भारत आते रहते थे। बरमा की एक पुरानी कथा के अनुसार बरमा का एक महानाविक प्रतिवर्ष भारत जाया करता था, और वाराणसी से मूर्तियां खरीदकर उन्हें पेगू में वेच देता था। यह स्वाभाविक था, कि मूर्तियां बरमा की मूर्तिकला को प्रभावित करें। राजा केनजित्या ने जिस आनन्द विहार का निर्माण कराया था, वह पूर्णतया भारत के विहारों की पार्श्व अनुकृति है। इस विशाल विहार के प्रत्येक की लम्बाई 175 फीट है, और इसके चारों ओर जो आंगन है वह 564 फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है । विहार के बीच में 8 फीट ऊँचे सिंहासन पर विशाल बुद्ध मूर्ति प्रतिष्ठापित है, जो 31 फीट ऊँची है । विहार की पहिली परिक्रमा की दीवारों में 80 गवाक्ष हैं, जिनमें बुद्ध के जीवन के प्रारम्भ से बुद्धत्त्व प्राप्ति तक की घटनाएँ अंकित हैं। दीवारों और विहार की ढलानों पर कलई वाली मिट्टी की रूपावलियां बनायी गई हैं। दूसरे तल पर मिट्टी की चमकीली पावलियाँ हैं, जिनमें साढ़े पांच सी जातक कथाएँ अंकित हैं। सारे मूर्ति-अंकनों की मंख्या 1472 हैं। इस विहार पर भारत का बहुत प्रभाव है, यद्यपि इस आनन्द विहार का निर्माण बरमा की राजधानी में किया गया था, इसे एक भारतीय विहार ही माना जा सकता है।

पगान (अरिमर्दनपुर) के चारों ओर का 100 वर्गमील का प्रदेश ऐसा है, जिसमें पुराने विहारों तया मन्दिरों आदि के भग्नावशेष सर्वत्र विखरे पड़े हैं। अनुमान किया गया है, कि जिन मन्दिरों आदि के ये अवशेष हैं, वे संख्या में 1000 के लगभग थे। इनमें से बहुसंख्यक तो अब पूर्णतया नष्ट हो चुके हैं, पर कुछ ऐसे भी हैं जो पर्याप्त रूप से सुरक्षित दशा में हैं। उन्हें देखकर यह अनुमान कर सकना कठिन नहीं है, कि आनन्द विहार के समान इनका निर्माण भी भारतीय वास्तुशिल्प के अनुसार किया गया था। इनका काल भी ग्यारहवीं और बारहवीं सदियों का माना जाता है। पगान के अवेयदान और कुव्योविक विहारों के भित्तिचित्रों में बुद्ध और

बोधिसत्त्वों के साथ-साथ ब्रह्मा, शिव, विष्णु, गणेश आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है, कि भारत के समान बरमा में भी धार्मिक समन्वय की सत्ता थी, और वहाँ के लोग पूरी तरह से भारतीय संस्कृति को अपना लिया था।